श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान

रचियता :

na_nyÁ`j m y{V©

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी

सम्पादन :

पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन

सहयोगी :

ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी

ब्र. सपना दीदी एवं ब्र.

संस्करण : द्वितीय प्रतियाँ : 2000

मुद्रक :

राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर, फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791

विशाल एवम् भव्य आयोजन : विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर डिग्गी (टोंक)

दिनांक 26 मार्च, 2005

के पावन अवसर पर प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशनार्थ सहयोगी जन

प्रेरक : विधान प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री विमलकुमारजी जैन, मालवीय नगर, जयपुर

1. श्रीमती मन्जूदेवी ध.प. श्री भागचन्दजी पुत्र श्री कपूरचन्दजी जैन, डिग्गी
2. श्री ओमप्रकाशजी लोकेशकुमारजी कलवाड़ा, डिग्गी
3. श्री कैलाशचन्दजी मुकेशकुमारजी पापड़ीवाल, डिग्गी
4. श्री रतनलालजी ओमप्रकाशजी (हाडीगांव वाले), डिग्गी
5. श्री मदनलालजी प्रहलादरायजी कनोई, डिग्गी
6. श्री पदमचन्दजी हुकमचन्दजी जैन, डिग्गी
7. श्री शान्तिलालजी महेन्द्रकुमारजी लुहाड़िया, डिग्गी
8. श्री नाथूलालजी जगदीशप्रसादजी (शिवदासपुरा वाले), चाकसू
9. श्री मुकुटकुमारजी हेमेन्द्रकुमारजी सेठी, मानसरोवर, जयपुर
10. श्रीमती कल्पना ध.प. श्री हेमेन्द्रजी सेठी, मानसरोवर, जयपुर
11. श्रीमती मृदुला ध.प. श्री गिरीश जैन (महावीर जेम्स), जयपुर

प्राप्ति स्थान

* श्री विशदसागर माध्यमिक विद्यालय, बरौदिया कलाँ, जिला सागर (म.प्र.)
  फोन : 07581-274244
* श्री विराग साहित्य सदन, गोटेगाँव, जबलपुर (म.प्र.)
* जैन सरोवर समिति
  विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,
  जौहरी बाजार , जयपुर ● फोन : 2503253 मो. : 94140-54624
* श्री प्रमोद जैन, 91 क्लर्क कॉलोनी, परदेशीपुरा, इन्दौर
* आचार्य श्री विशदसागर ज्ञान मन्दिर, डिग्गी (टोंक) राजस्थान

स्वयं की कलम से

जिन पूजा है कल्पतरु सर्व सुखों की खान।
उभय लोक सुखकर 'विशद', करो प्रभु गुणगान।।

आज के इस भौतिक वादी युग में इन्सान इतना अधिक बिखर चुका है कि उसे संसारिक पदार्थ ही सर्वस्व नजर आते हैं और धर्म-कर्म को भूलकर सांसारिक पदार्थों को एकत्र करने की अंधी दौड़ में दौड़ता है, किन्तु जब थक जाता है तो कभी पीर पैगम्बर और कभी काली भैरों के चक्कर काटने लगता है। जिससे अपने सम्यक्त्व की क्षति कर जिनधर्म को दूषित करता है। ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़े रहने के लिए सांसारिक पदार्थों के लिए पुण्य संचय हेतु जिन देव-शास्त्र-गुरु की आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य से सारी सुख सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। पुण्य संचय हो और इन्सान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु इस **''श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान''** की रचना की गई। हमें विश्वास है कि अवश्य ही अधिक से अधिक लोग यह पूजन विधान करके धर्म लाभ एवं पुण्य संचय कर सुख शांति प्राप्त करेंगे। परम्परा से 'विशद ज्ञान' और मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे।

ह्न आचार्य विशदसागर

प्राक्कथन

जिनवर की भक्ति बढ़ी, सब कुछ दे दरसाय।
लौकिक की तो बात क्या, शिव सुख दे प्रकटाय।।

अर्थात् जिनेन्द्र भक्ति-इहलोक-परलोक सम्बंधी अभ्युदय को प्राप्त कराते हुये असीम शाश्वत/निराकुल सुख को प्राप्त कराने में सक्षम है। समाधि भक्ति में आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने भी स्पष्ट किया है।

एकापि समर्थेयं, जिन भक्ति दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।। श्लोक 8।।

अर्थ :ह्न एक मात्र जिन भक्ति ही कुगति का नाश करती है और पुण्य प्रदान कराती है तथा मुक्ति प्राप्त कराने में समर्थ है। अतः भक्ति से अभ्युदय और निःश्रेयस् दोनों सुख प्राप्त होते हैं।

भक्ति में समर्पण का भाव प्रधान होता है। भक्त अपने जीवन को तभी सार्थक मानता है, जब वह भगवान की शरण में चला जाये। त्रियोग से समर्पण में अद्भुत सौन्दर्य है। नश्वर शरीर की सार्थकता भी तभी है जब वह जिनेन्द्र भक्ति में तल्लीन हो। स्तुति विद्या में आचार्य श्री समन्तभद्रजी लिखते हैं। कि हे भगवन् ! प्रज्ञा वही है जो आपका स्मरण करे, सिर वही है जो आपके पैरों में विनत हो, जन्म वही है जिसमें आपके पादपद्म का आश्रय लिया गया हो। आपके मत में अनुरक्ति है, मांगल्य है। वाणी वही है जो आपकी स्तुति करे और विद्वान भी वही है जो आपके समक्ष झुका रहे।

भगवत् भक्ति ही मुक्ति का साधन और मोक्ष प्राप्ति हेतु साध्य है। साध्य की सिद्धि हेतु भक्ति रूप साधन का अवलम्बन लेकर तन्मय होना आवश्यक है। यही सिद्धि का महामंत्र है। ऐसी भक्ति ही सर्व कल्याणकारिणी है। भक्ति का तात्कालिक फल चित्त की प्रसन्नता है, मस्तिष्क की

सांत्वना और हृदय की पवित्रता है तथा परम्परा से उसका फल सद्गति और मोक्ष है।

जिस प्रकार सामान्य गृहस्थ (श्रावक) अष्ट द्रव्य से पूजन कर अपना कर्त्तव्य पालन करते हुये मोक्षमार्ग प्रशस्त करता है। उसी प्रकार मुनिराज/आर्यिकादि भी भक्ति पाठ, भावपूजनादि करते हुये धर्म ध्यान में निमग्न रहते हैं। इसी श्रृंखला में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज के प्रशिष्य बुन्देलखण्ड के गौरव प्रथमाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज के शिष्य प्रखर वक्ता, भद्र परिणामी, **आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज श्री** ने भक्ति विद्या के माध्यम से देवाधिदेव भगवान 1008 श्री पार्श्वनाथजी को लक्ष्य करके **''श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान''** के रूप में एक नवीन सरलतम प्रस्तुति दी है। प्रस्तुत विधान में 5 वलय के मध्य में 'ह्रीं' बीजाक्षर अंकित करके यथैव श्री सिद्धचक्र विधान वत् अष्ट वलयों में द्विगुणित-द्विगुणित अर्घावली से सिद्धात्म स्वरूप का विवेचन किया है तथैव पूज्यश्री ने प्रथम वलय में 5 'क्लीं' बीजाक्षर स्थापित करके शेष 4 वलयों में भी द्विगुणित-अर्घ क्रमश: 10-20-40-80 संख्या क्रम में रखकर जिनेन्द्र आराधना का उपक्रम किया है।

सरल शब्दावली, गहन भाव भक्ति-उभय लोक सम्बंधी सुख का दिग्दर्शन, विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया गया है। कृति का यथासंभव अवलोकन किया, रुचिकर प्रतीत हुआ। आशा है प.पू. आचार्यश्री द्वारा विरचित-भगवत् भक्ति की यह अनुपम प्रस्तुति सर्व साधर्मियों एवं जनसाधारण के लिये उपयोगी सिद्ध होगी जन-जन के द्वारा वंदनीय होगी और नि:सन्देह भव्य जीवगण इसके द्वारा अपने भाव विशुद्धि करते हुये जीवन प्रशस्त करेंगे। ऐसी शुभ-मंगल भावना के साथ

गुरुपद चंचरीक

प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन

शास्त्री 'दीवान'

12 अक्टूबर, 2004

द्वारा -
कला संगम केन्द्र, स्वामी इण्टर कॉलेज के पास, दत्तपुरा-मोरेना (म.प्र.)
फोन : 07532-228397
मो. : 9893187911

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	विधान का फल एवं माँड़ना	7
2	पूजन सामग्री	8
3	अंगन्यास विधि	9
4	देव-शास्त्र-गुरु पूजन	14
5	नवदेवता पूजन	19
6	पार्श्वनाथ स्तोत्र	25
7	पार्श्वनाथाष्टक	26
8	पार्श्वनाथाष्टक पूजन एवं विधान	27
9	श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती	73
10	आचार्यश्री का पूजन	75
11	आचार्यश्री की आरती	79

विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान करने का फल

1. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के सामने यह विधान एवं जाप करने से मानसिक असंतुलन की बाधा दूर होगी।
2. जीवन में आने वाली शारीरिक बाधाऐं दूर होंगी।
3. व्यवसाय में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
4. गृहस्थ जीवन में होने वाले कलह दूर होंगे।
5. यात्रा में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
6. साधना में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
7. सन्तानों की प्राप्ति में आने वाले अवरोध दूर होंगे।
8. शिक्षा में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
9. सेवा नौकरी में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
10. अपने स्नेहीजनों से मिलने में आने वाला अवरोध दूर होंगे।
11. जीवन सुखमय एवं समृद्ध बनेगा।

विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान का माँड़ना

मध्य में - ह्रीं
प्रथम वलय में - 5
द्वितीय वलय में - 10
तृतीय वलय में - 20
चतुर्थ वलय में - 40
पंचम वलय में - 80

पूजन सामग्री

सामग्री	मात्रा	सामग्री	मात्रा
हल्दी गाँठ	21	पीले सरसों	ग्राम100
चाँवल	ग्राम 2500	पंचवर्ण सूत्र	ग्राम
चिटकें	ग्राम 250	पीत वस्त्र	आधा मीटर
धूप	ग्राम 250	छन्ना अँगौछी	1, 5
घी	ग्राम 250	रुई माचिस	
सुपाड़ी बड़ी	51	यज्ञोपवीत	12
सुपाड़ी छोटी	250	दीपक छोटे	12
बूरा	ग्राम 250	दीपक बड़े	12
गरी पाउडर	ग्राम 250	कूंड़े	2
कनकी	ग्राम 1250	चार रंग तोला	2
पिसी हल्दी	ग्राम 10	जापें नई	12
लवंग	ग्राम 10	कापी	1
कपूर देशी	ग्राम 10	शुद्ध धोती दुपट्टे	
रोरी	ग्राम 10	बनयानें	
अगरबत्ती	100	फूल मालाएँ	12
नारियल	7	तखत	1
रुपया नकद	5	बाजौटा	5
चुवन्नी	5	सिंहासन	2
टेविलें	2	छत्रत्रय	1
मोंदरा	2	पाटे	5

अंगन्यास विधि

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और तत्तद् दिशाओं से आने वाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास किया जावे। दोनों हाथों के अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पांचों अंगुलियों में क्रम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना करें। पूजन जाप या हवन में बैठने वाले महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिलाकर सामने करें। तथाहृह्न

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

इस मंत्र का उच्चारण कर अंगुष्ठों पर सिर झुकावें। फिर दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठा के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें औरहृह्न

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर तर्जनियों पर सिर झुकावें। फिर बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करें औरहृह्न

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर मध्यमाओं पर सिर झुकावें। फिर दोनों अनामिकाओं को मिलाकर सामने करें औरहृह्न

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर अनामिका पर सिर झुकावें। फिर दोनों कनिष्ठाओं को मिलाकर सामने करें और–

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठाओं पर सिर झुकावें। फिर दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर करतलों (गदियों) पर सिर झुकावे। फिर दोनों कर पृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के ऊपरी भाग पर सिर झुकावें। तदनन्तरहृह्न

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से सिर का स्पर्श करें। फिर

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से हृदय का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से पैरों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूजा की सामग्री का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर फैकें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

इस मंत्र से चुल्लू के जल को मंत्र कर अपने सिर पर सींचें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर परिचारकों पर पुष्प छोड़ें)

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

परिणाम-शुद्धि-मन्त्र

विधिं विधातुं यजनोत्सवे, ऽगेहादिमूर्च्छामपनोदयामि।
अनन्यचित्ता कृतिमादधामि, स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि।।

यह पढ़कर पात्रों से गृहस्थी के कार्यों से प्रकृत विधानपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा कराई जावे।

रक्षा मन्त्र

ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

शान्ति मन्त्र

ॐ क्ष्रूं ह्रूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, कुरु, परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से भी पीले सरसों या चावलों को तीन बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर प्रक्षेप किया जावे। किरीट (मुकुट), मुद्रा (परवाना, छाप, मुहर)

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहंरत्नत्रय चिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पुरुष पात्रों को 'यज्ञोपवीत' पहिनाया जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिमंत्र सर्वांगशुद्धिः भवतु।

यह मंत्र पढ़कर पात्रों पर जल छिड़ककर उनकी अंतिम शुद्धि की जावे।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान कार्यं। .. श्री वीर निर्वाण निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं झ्वीं झ्वीं हं सः स्वाहा।

नोट :– यह पढ़कर मण्डल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

संकल्प मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे... देशे प्रदेशे.. नगरे चैत्यालये ... श्री वीर निर्वाण संवत्सरे ... मासे ... पक्षे... तिथौ शुभवेलायां परमार्थानां देवशास्त्रगुरुणां सन्निधौ परमधार्मिक श्रावकाणां विदुषां वा सन्निधौ शान्तिक पौष्टिक निखिल–कार्यसिद्ध्यर्थं अमुकवासरादारभ्य अमुक वासरपर्यन्तं होरा ... पर्यन्तं महामहिम– समाधिष्ठितस्य अचिन्त्यामेयफलप्रदस्य श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ मण्डल विधान (भक्तामरस्तोत्रस्याखण्डपाठं) करिष्यामहे।

दीपक स्थापन

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर–मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

***

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

श्री देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
जिन कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य–चैत्यालय, श्री सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध सिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: श्री कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय श्री अनन्तान्त श्री सिद्ध परमेष्ठी श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कायोत्सर्गं कुरु...

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योःकामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

दोहा

मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।

लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं। शतेन्द्रं सु पूजें भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं। नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं।।1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै। महा आगतैं नागतैं तू बचावै।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै। महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै।।2।।

दुखी दुःखहर्ता सुखी सुक्खकर्ता। सदा सेवकों को महानन्द भर्ता।।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं। विषं डांकिनी विघ्न के भय अवाचं।।3।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने। अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।।
महासंकटों से निकारै विधाता। सबै संपदा सर्व को देहि दाता।।4।।

महाचोर को वज्र को भय निवारे। महापौन के पुंजतै तू उबारै।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा। महालोभ शैलेश को वज्र भारा।।5।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं। महा-कर्म कांतार को दो प्रधानं।।
किये नाग-नागिन अधोलोक स्वामी। हर्यो मान तू दैत्य को हो अकामी।।6।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं। तुही दिव्य चिंतामणी नाग एनं।।
पशु नर्क के दुःखतै तू छुड़ावै। महास्वर्गतै मुक्ति में तू बसावै।।7।।

करै लौह को हेम पाषाण नामी। रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा। सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा।।8।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै। धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे। तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे।।9।।

दोहा - **गणधर इन्द्र न कर सकें, तुम विनती भगवान।**
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान।।10।।

***

पार्श्वनाथाष्टक

श्यामो वर्ण विराजितेति विमले श्यामोऽपि सर्पो स्मृत:।
श्यामो मेघनिघर्घरोपि च घटाश्यामं च रात्र्यखिलं।।
वर्षा मूसलधारणं च मखिलं कायोत्सर्गेणतां।
धरणेन्द्रो पद्मावती युगसुरं श्री पार्श्वनाथं नम:।।1।।

नम: श्री पार्श्वनाथाय त्रैलोक्याधिपतेर्गुरु:।
पापं च हरते नित्यं पार्श्वतीर्थस्य दर्शनम्।।2।।

ॐ ऐं क्लीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल।
पराक्रमाय ऐं ह्रीं क्लीं क्म्ल्व्र्यूं नम:।।3।।

दर्शनं हरते पापं, दर्शनं हरते दुखं।
दर्शनं हरते रोगान्, व्याधिर्हरति दर्शनम्।।
ॐ आं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं नम:।।4।।

दर्शनाल्लभ्यते ज्ञानं, दर्शनाल्लभ्यते धनं।
दर्शनाल्लभ्यते पुत्रं, सुखी भवति दर्शनात्।।
ऐं ॐ अ: नम: बार नव जाप्यं दीयते।।5।।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनं।
विद्यार्थी लभते विद्यां, सुखी भवति निश्चितं।।6।।

राज्य-मान्यं भवेन्नित्यं, प्रजानां च विशेषत:।
दुर्जनाश्च क्षयं यांति, श्रेयो भवति संकटे।।7।।

इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं त्रि-संध्यं च विशेषत:।
गृहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थस्तवेन च।।8।।

।। इति ।।

श्री पार्श्वनाथ पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन–जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्मां ह्मीं ह्मूं ह्मौं ह्मः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ खां खीं खूं खौं खः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **माँ वामा के लाड़ले, विश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल।।1।।

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नात्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा

भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्।

(अब प्रथम वलय के कोष्ठों पर पुष्पाजलिं क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख–शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन–जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पंचकल्याणक युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशी काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर बाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया,
भा बारह भावन अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, तपकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 4 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 5 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।**
प्राप्त किये जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पंचकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(द्वितीय वलय के कोष्ठों पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्वप्रभो ! हे पार्श्वप्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल पर आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दस धर्म युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(चाल छन्द)

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे ! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे ! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम शौच धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम सत्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम संयम धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम तप धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम त्याग धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किचिंत् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
वे आकिञ्चन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आकिञ्चन धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत् चेतन चित्धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
वे क्षमा आदि वृषधारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन..... ।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, क्षमादि धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्

(मण्डल में तृतीय वलय के 20 कोठों पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना (गीता छन्द)

हे पार्श्वप्रभो ! हे पार्श्वप्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल पर आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

4 आराधना 16 कारण भावना युत पार्श्व प्रभु की पूजा (गीता छन्द)

पच्चीस दोष विमुक्त शुभ, अष्टांग सद्दर्शन कह्यो।
जिनदेव आगम मुनिवरों में, हृदय से श्रद्धा गह्यो।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाराधनाय सर्व बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री द्वादशांग जिनेन्द्र वाणी अष्टांगमय निर्दोष है।
सम्यक् विभूषित आत्म ज्योति, ज्ञान गुण की कोष है।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्ज्ञानाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों महाव्रत समिति गुप्ति, मन वचन औ काय हो।
तेरह विधी चारित्र पालें, ह्रदय से हर्षाय हो।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 3 ।।

ॐ ह्रीं तेरहविध शुद्ध सम्यक्चारित्राराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् विधि तप तपे द्वादश, बाह्य अभ्यंतर सभी।
निज कर्म क्षय के हेतु तपते, चाह न रखते कभी।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 4।।

ॐ ह्रीं द्वादश विधि शुद्ध सम्यक् तपाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धी भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही।
यह मोक्ष बट का बीज उत्तम, या बिना नहिं शिव मही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
दर्शन विशुद्धि भावना शुभ, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय गुण सद्धर्म का शुभ, मूल तुम जानो सही।
बिन विनय किरिया धर्म की, इस लोक में निष्फल कही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा-मंगल रूप है।
पाऊँ विनय सम्पन्नता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष अष्टादश सहस व्रत, शील का पालन महा।
अतिचार रहित सुव्रतों की शुभ, भावना में रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
शीलव्रत अनतिचार है जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत अवधि सुज्ञान मनः, पर्यय तथा केवल कहा।
सद्ज्ञान के उपयोग में, जिनका सु मन नित रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं ज्ञानोपयोग ऽभीक्ष्ण जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म औ सद्धर्म फल में, हर्ष मय संयुक्त हैं।
जो जगत् दुख मय जानकर, विषयों से पूर्ण विरक्त हैं।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं भाव संवेगता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।9 ।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाप गिरि के तोड़ने को, सुतप वज्र समान है।
तप ही भवोदधि पार हेतु, विमल अमन विमान है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं सम्यक् तप ह्रदय से, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग जलाय सद्‌गुण, त्याग जग सुखदाय है।
भवि त्याग भाव जगाय उर में, यही मोक्ष उपाय है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं त्याग सुभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तितस्त्याग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या विधि मुनिन को सुख बढ़े, साधु समाधि जानिए।
उपसर्ग परीषह राग भय, बाधा सभी कुछ हानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं साधु समाधि भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु जन की साधना के, विघ्न सारे टालकर।
साधना में हो सहायक, भाव शुभम् संभालकर।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं वैयावृत्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय चौंतिस प्रातिहार्य वसु, ऽनन्त चतुष्टय जानिए।
छियालीस गुण संयुक्त निर्मल, भक्ति भाव प्रमानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं अर्हत् भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हद् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सुज्ञान चारित्र तप, अरु वीर्य पंचाचार हैं।
छत्तीस गुण संयुक्त गुरु की, भक्ति जग में सार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं आचार्य भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान द्वादश अंग चौदस, पूर्व धारी जिन मुनी।
पढ़ते पढ़ाते मुनिवरों को, उपाध्याय भक्ती गुणी।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं बहुश्रुत भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद युत अनेकांतमय, जिनदेव की वाणी कही।
जो है प्रकाशक चराचर की, विमल जिन वाणी रही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं प्रवचन भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता सुवन्दन प्रतिक्रमण, व्युत्सर्ग प्रत्याख्यान है।
स्तव सहित षट् कर्म पालन, से ही निज कल्याण है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं आवश्यक अपरिहार जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकापरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह का तम सघन जग में, कठिन जिसका पार है।
जिन मार्ग का उद्योत करना, मोक्ष मारग सार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं मार्ग प्रभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की वाणी सुनिर्मल, मोक्ष की दातार है।
वात्सल्य प्रवचन शास्त्र में हो, यही सुख आधार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं वात्सल्य भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वात्सल्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग दर्शन ज्ञान चारित, सद्गुणों के कोष हैं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जग में, विघ्नहर निर्दोष हैं।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं भाऊँ सोलह भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।21।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित चऊ आराधना दर्शन विशुद्धिआदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

(चतुर्थ वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

पार्श्व प्रभु की पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्वप्रभो ! हे पार्श्वप्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल पर आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 इन्द्र एवं 8 कुमारी द्वारा पूजित

(जोगी रासा छन्द)

असुर इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।6।।

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।8।।

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।9।।

ॐ ह्रीं दीप इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्सुरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।15।।

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।17।।

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।20।।

ॐ ह्रीं रविइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।22।।

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।23।।

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिनपूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।28।।
ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।29।।
ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।30।।
ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।31।।
ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।। 32।।
ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।33।।
ॐ ह्रीं श्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।34।।

ॐ ह्रीं ह्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृति देवी परिवार सहित जिन, पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।35।।
ॐ ह्रीं धृतिदेवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।36।।
ॐ ह्रीं कीर्ति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।37।।
ॐ ह्रीं बुद्धि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।38।।
ॐ ह्रीं लक्ष्मी देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।39।।
ॐ ह्रीं शांति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।40।।
ॐ ह्रीं पुष्टि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र वसु देवियाँ, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।41।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत इन्द्र एवं अष्ट कुमारिका परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्। (पंचम वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्वप्रभो ! हे पार्श्वप्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

64 ऋद्धि 8 प्रातिहार्य 8 गुण युक्त पार्श्वप्रभु

तर्ज - रंगमा-रंगमा (परदेशी-परदेशी...)

तीन लोक तिहुँ काल के सुन भाई रे !
सकल द्रव्य को जाने हो जिन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
केवल बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।1।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के मन की बात को जाने भाई रे !
मन: पर्यय बुद्धि ऋद्धि धर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
मन: पर्यय ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।2।।

ॐ ह्रीं मन:पर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल परमाणु को भी जाने भाई रे !
अवधि ऋद्धि को धार मुनीश्वर भाई रे !!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
अवधि बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।3।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरी कोष्ठ में वस्तु अनेकों भाई रे !
शब्द अर्थ मय कोष्ठ ऋद्धि धर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।4।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज बोय तो धान अधिक हो भाई रे !
बीज ऋद्धि में सार ग्रंथ को गाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
बीज बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।5।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद बहु शब्दों को सुनकर भाई रे !
सर्व का धारण हो जावे मन भाई रे !

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।6।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखें एक पद जैन मुनीश्वर भाई रे !
सब ग्रन्थों का सार कहे सुन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
पादानुसारि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।7।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजन से दूर की सुन भाई रे !
स्पर्शन की शक्ति ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरस्पर्शन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।8।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे !
रसस्वाद की शक्ति ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दूरास्वादन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।9।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे !
गंध ग्रहण की शक्ति ऋषिवर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दूर गन्ध ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।10।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सेंतालिस सहस तिरेसठ भाई रे !
योजन दृष्टि को बल ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दूरावलोकन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।11।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश योजन दूर को सुन भाई रे !
दूरश्रवण ऋद्धि ऋषिवर ने पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दूरश्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।12।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्वधर सब विद्याएँ पाई रे !
लौकिक इच्छा कुछ न ऋषिश्वर चाही रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दशम पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।13।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब धारण तप से पाई रे !
चरण कमल में मन वच तन सिर नाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
चौदह पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण भाई रे !
अष्टांग निमित्त, बुद्धि ऋद्धीधर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
अष्टांग-निमित बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।15।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादिक के भेद पढ़े बिन गाई रे !
अंग पूर्व का ज्ञान मुनी समझाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
प्रज्ञा श्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।16।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ तें जीव भिन्न हैं भाई रे !
यातें पर की चाहत मेटो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।17।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी ऋषिवर के सम्मुख आई रे !
स्याद्वाद कर किया पराजित भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
वादित्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे !।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थल वत् चालें भाई रे !
जल जंतु का घात न होवे भाई रे !

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
जल चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।19।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू ऊपर चालें भाई रे !
क्षण में बहु योजन तक जावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
जंघा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।20।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तंतु पर चालें भाई रे !
भार से तंतु भी न टूटे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
तंतु चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।21।।

ॐ ह्रीं तंतुचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प के ऊपर गमन करें सुन भाई रे !
पुष्प जीव को बाधा न हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
पुष्प चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।22।।

ॐ ह्रीं पुष्पचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्रों के ऊपर गमन करें सुन भाई रे !
पत्र जीव को बाधा न हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
पत्र चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।23।।

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजन पे मुनि गमन करें सुन भाई रे!
बीज जीव को बाधा ना हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
बीजा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।24।।

ॐ ह्रीं बीज चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी वत् मुनि गमन करे सुन भाई रे!
षट्काय जीव को घात न होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।25।।

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पे गमन करें सुन भाई रे!
अग्नि शिखा भी हले नहीं सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अग्नि चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।26।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गादि आसन से मुनि भाई रे!
गमन करें नभ माहिं ऋषीश्वर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
नभ चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।27।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु समान काया हो जावे भाई रे!
कमल तंतु पर निराबाध तिष्ठाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अणिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।28।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख योजन तन की ऊँचाई भाई रे!
नरपति का वैभव उपजावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
महिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।। 29।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया विशाल मुनि जन-जन को दिखलाई रे!
अर्क तूल सम हल्का तन हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
लघिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।30।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया सूक्ष्म मुनि सब जन को दिखलाई रे!
इन्द्रादिक के द्वारा न हिल पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
गरिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।31।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चंद्र ग्रह मेरुगिरि सुन भाई रे!
भू पर रह स्पर्श करें मुनि भाई रे!

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राप्ति ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।32।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि रूप बनाते मुनिवर भाई रे!
पृथ्वी में जल वत् धस जावें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राकाम्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।33।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता मुनिवर पाई रे!
इन्द्रादिक सब शीष झुकाते भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ईशत्व ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!।।34।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके वल्लभ गुण के दाता भाई रे!
तीन लोक दर्शन करके वश हो जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
वशित्व ऋद्धीधर पूजों हो भाई रे!।।35।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत माहिं निकस जावें मुनि भाई रे!
रुकें नहीं काहू से मुनिवर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अप्रतिघात ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।36।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके देखत प्रच्छन्न होवें भाई रे!
मुनि को जाते कोई देख न पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अन्तर्धान ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।37।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछित बहु रूप बनावें भाई रे!
कामरूपिणी विद्या मुनिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कामरूप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।38।।

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि तप करके अधिक बढ़ाई रे!
उग्र तपोऋद्धि तें ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
उग्र तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।39।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि कर क्षीण भयो तन भाई रे!
दीप्त तपो ऋद्धि में दीप्ति पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दीप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।40।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार करत नीहार न होवे भाई रे !
तन में शुष्क हो तप ऋद्धि तें भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
तप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।41 ।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस नाणी में सबनि जीव के भाई रे !
सबहि भाव की जानन शक्ति पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
महातपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।42 ।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा अनशनादि मुनि पाई रे !
ध्यान व्रतों से डिगें नहीं ऋषि भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
घोर तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।43 ।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट सतावें ऋषिवर को सुन भाई रे !
मरी आदि भय आवे जग में भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
घोर पराक्रम ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।44 ।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी हो ऋषि भाई रे !
सर्व रोग मिट जावे मुनि ठहराई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।45 ।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के सब अक्षर को भाई रे !
मन में अर्थ विचारि मुहूर्त्त में पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
ऋषि मनोबल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।46।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान को पाठ मुहूर्त्त में भाई रे !
कण्ठ में खेद न होवे करके भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
ऋषि वचन बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।47 ।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक ऊँगली तें मुनि हिलाई रे !
गर्व करें नहिं बल को जिन मुनिराई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
काया बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।48 ।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर के चरणों की रज भाई रे !
हरती सारे रोग क्षणिक में भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
आमर्षौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि को थूक खखार लगत सुन भाई रे !
मिटते सारे रोग तुरत ही भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
खेल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।50।।

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर तन की स्वेद युक्त रज भाई रे !
सर्व व्याधि स्पर्श किए नश जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
जल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।51।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत नासिका अंगों का मल भाई रे !
सर्व रोग को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
मल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।52।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य मूत्र मल मुनि के तन का भाई रे !
नाना व्याधि को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
विडौषधी ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से स्पर्शित चले हवाई रे !
आधि व्याधि को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
सर्वौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के कर में विष अमृत हो भाई रे !
वचन सुनत मूर्छित निर्विष हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
आस्य विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।55।।

ॐ ह्रीं आस्य विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पादिक का जहर व्याप्त तन भाई रे !
मुनि की दृष्टि परत दूर हो जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे !
दृष्टि विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।56।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर क्रोध से कहते तू मर जाई रे!
सुनकर प्राणी तुरन्त ही मर जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आशीर्विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।57।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध दृष्टि मुनि की पड़ जावे भाई रे!
दृष्टि पड़ते तुरन्त मर जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दृष्टि विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।58।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विषरस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
क्षीर युक्त सुस्वादु होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
क्षीर स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।59।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
मधु सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मधुस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।60।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
घृत सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घृतस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।61।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में विष अमृत होवे भाई रे!
वचनामृत संतुष्ट करें सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अमृतस्रावी ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।62।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार करें जाके घर भाई रे!
चक्रवर्ती की सेना तहं पे जीमें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण संवास ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।63।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ घर में मुनि तिष्ठे भाई रे!
ता घर चक्रवर्ती की सैन्य समाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण महानस ऋद्धीधर पूजों भाई रे!।।64।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुख दाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।65।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुर वासी, पुष्प लिए भाई।
पुष्प वृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।66।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगल दाई।
दिव्य ध्वनि सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।67।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुन्दर सुखदाई।
चौंसठ चँवर ढुरे प्रभु आगे, अति शोभा पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।68।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं धवलोज्ज्वल चौंसठ चँवर सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम वीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत् पूज्य भाई।
रत्न जड़ित अतिशोभा मंडित, सिंहासन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।69।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं रत्नजड़ित सिंहासन सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत् ज्योति श्री जिनवर तन की, अतिशय चमकाई।
प्रभा पुँज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।70।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्ष भाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
देव दुन्दुभी प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।71।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं दुन्दभि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़े कनक नग क्षत्र मणीमय, रत्न माल लपटाई।
तीन लोक के स्वामी हों, ज्योंक्षत्रत्रय पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।72।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं क्षत्र त्रय सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।73।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त सम्यक्त्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनन्ता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, 'विशद' ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।74।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, उत्तम दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।75।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों ने शक्ति, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।76।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, नाश किये भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।77।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।78।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मेट निरन्तर, निज आतम ध्यायी।
उत्तम अगुरु-लघु गुण योगी, स्वगुण प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।79।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव भय भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।80।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि धार मुनीश्वर, वसु गुण प्रगटाई।
प्रातिहार्य वसु पाये प्रभु ने, भविजन सुख दाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।81।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...,

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धर अष्टगुण एवं अष्ट सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनन्दा श्री जिन चंदा, शिवसुख कंदा ज्ञान धरा।
हम पूजें ध्यावें तव गुण गावें, मिट जावे मृतु जन्म जरा।।
पुष्पाजंलि क्षिपेत् ।

जाप :- (1) ॐ नमोऽर्हते भगवते सकल विघ्नहर ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं, ह्र: अ सि आ उ सा श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वोपद्रव शांतिं, लक्ष्मी लाभं कुरु कुरु नम: स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **तीन योग से देव की, पूजा करूँ त्रिकाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, अब गाऊँ जयमाल।।

(हे दीन बंधु श्री पति...)

जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ देव हमारे,
जय विघ्न हरण नाथ भव दु:ख निवारे।।
जय-जय प्रसिद्ध देव का गुणगान मैं करूँ,
जय अष्ट कर्म मुक्त का शुभ ध्यान मैं करूँ।।1।।

छ: माह पूर्व गर्भ के, नगरी को सजाया,
देवों ने सारे लोक में शुभ हर्ष मनाया।।

काशी नरेश अश्वसेन धर्म के धारी,
रानी थी वामादेवी, शुभ लक्षणा नारी।।2।।

प्राणत विमान से चये सुगर्भ में आये,
देवेन्द्र ने प्रसन्न हो बहु रत्न वर्षाये।
एकादशी को पौष कृष्ण जन्म जिन पाया,
आनन्द रहस देवों ने आके रचाया।।3।।

सौधर्म इन्द्र ऐरावत स्वर्ग से लाया,
पाण्डुक शिला में जाके अभिषेक कराया।
बालक के दायें पग में अहि चिह्न था प्यारा,
पारस कुमार नाम ले सौधर्म पुकारा।।4।।

माता के हाथ सौंप दिए इन्द्र बाल को,
माता पिता प्रसन्न हुए देख लाल को।
बढ़ने लगे कुमार श्वेत चाँद के जैसे,
उपमा नहीं है कोई गुणगान हो कैसे।।5।।

करते कुमार क्रीड़ा मित्रों के साथ में,
लेते कुमार को सभी अपने सु हाथ में।।
अष्टम बरस की उम्र में देशव्रत धारे,
रहने लगे कुमार जग में जग से न्यारे।।6।।

यौवन अवस्था देख पिता ब्याह की ठानी,
बोले कुमार चाहूँ मैं मोक्ष की रानी।
हाथी पे बैठ जंगल की सैर को गये,
देखे वहाँ पे जाके अचरज कई नये।।7।।

पञ्चाग्नि तप में तापसी खुद को तपा रहा,
लकड़ी में कई जीवों को वह जला रहा।
तापस से कहा पार्श्व ने क्यों जीव जलाते,
जलते हुए प्राणी सभी दुख वेदना पाते।।8।।

गुस्से में आके तापसी पारस से यूं बोला,
छोटे से मुख से बात बड़ी क्यों तू बोला।
पारस ने तापसी को विश्वास दिलाया,
लकड़ी को फाड़ते ही युगल नाग दिखाया।।9।।

नवकार मंत्र नाग युगल को सुना दिया,
जीवों ने जाके स्वर्ग लोक जन्म पा लिया।
वैराग्य पूर्ण दृश्य देख भावना भाये,
ब्रह्म ऋषि देव तब संबोधने आये।।10।।

तब देव चउ निकाय के वहाँ पालकी लाये,
शुभ पालकी में बैठ देव वन को सिधाए।
वहाँ पंच मुष्टि केशलोंच महाव्रत धारे,
फिर पय के धन-दत्त गृह लिए आहारे।।11।।

देवों ने तभी पंच विधी रत्न वर्षाये,
अहो दान पात्र बोल बोल देव हर्षाये।
जंगल में जाके पार्श्व प्रभु योग धर लिया,
पूरब के बैरी कमठ ने तब गौर कर लिया।।12।।

कीन्हा तभी उपसर्ग वहाँ आकर भारी,
घोर अंधकार किया रात ज्यों कारी।

तीक्ष्ण तीव्र वेग वाली तब हवा चलाई,
प्रचण्ड और भयानक तब दाह लगाई।।13।।
सु रण्डन के चउ दिश में मुण्ड दिखाए,
मूसल की धार सम वहाँ मेघ बरसाए।
पद्मावती धरणेन्द्र तभी दर्श को आए,
शीष पे बिठाय छत्र फण का बनाए।।14।।

हार मान कमठ देव चरण झुक गया,
कैवल्य ज्ञान जिनवर को तभी हो गया।
भव्यों को उपदेश देके बोध जगाया,
जीवों को आपने शुभ मार्ग दिखाया।।15।।

प्रभु स्वर्ण भद्रकूट तीर्थराज पर गये,
कर्म चउ अघातिया प्रभु वहाँ पे क्षये।
शुभ धीर-धारी धर्म धर पार्श्वनाथजी,
'विशद' भाव सहित झुके चरण माथ जी।।16।।

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनेशा, नाग नरेशा, नमित महेशा भक्ति भरा।
मन, वच, तन ध्यावें, हर्ष बढ़ावें, मंगलमय हो पूर्णधरा।।

ॐ ह्रीं सकल विघ्नहराय अनन्त चतुष्टय केवलज्ञान लक्ष्मी संयुक्ताय परम पवित्राय सर्वकर्म रहिताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पार्श्व प्रभु के चरण में, भक्ति सहित झुक जाय।
'विशद' ज्ञान पाके शुभम्, स्वयं पार्श्व बन जाय।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

रचयिता : आचार्य विशदसागर

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभू कर दो भव से पार आज थारी...

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।
जन्मे है काशीराज- आज थारी..... ।।1।।

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज- आज थारी आरती..... ।।2।।

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी आरती..... ।।3 ।।

दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी..... ।।4 ।।

''विशद'' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी आरती..... ।।5।।

।। इति समाप्तम् ।।

> इन्सान का जीवन क्या ? एक सुन्दर सी लोरी है।
> सम्पूर्ण प्रेक्टीकल नहीं मात्र थोड़ी सी थ्योरी है ।।
> गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास कहावत पुरानी है।
> गिरगिट की भांति रूप बदलना इन्सान की कमजोरी है।।

आरती श्री पार्श्वनाथ जी

ॐ जय पारस देवा, प्रभु जय पारस देवा।
सुर नर मुनि जन तुम चरनन की, करते नित सेवा ।।ॐ जय.।।

पौष बदी ग्यारस काशी में, आनन्द अति भारी।
अश्वसेन घर वामा के उर, लीन्हों अवतारी ।।ॐ जय.।।

श्याम वर्ण नव हस्त काय पग, उरग लखन सोहे।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण, सबका मन मोहे ।।ॐ जय.।।

जलते देख नाग नागिनी को, पढ़ नवकार दिया ।।ॐ जय.।।
हरा कमठ का मान ज्ञान का, भानु प्रकाश किया ।।ॐ जय.।।

मात पिता तुम स्वामी मेरे, आस करूँ मैं किसकी।
तुम बिन दूजा और न कोई, शरण गहूँ मैं जिसकी ।।ॐ जय.।।

तुम परमातम, तुम अध्यात्म तुम अन्तर्यामी।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता, त्रिभुवन के स्वामी ।।ॐ जय.।।

दीनबंधु दुःख हरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे।
दो शिवपुर का वास दास यह, द्वार खड़ा तेरे ।।ॐ जय.।।

विषय विकार मिटाओ मन का, अर्ज सुनो दाता।
सेवक द्वय कर जोड़ प्रभू के, चरणों चित् लाता ।।ॐ जय.।।

।। इति समाप्तम् ।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे गुरुवर !, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं।।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
तुम हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंसनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लायें हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर !, क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुंदर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की !, क्षुधा मेटने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंसनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर !, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करें त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।
आठ फरवरी सन् छियानवे में, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारी, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती।
तुममें कोइ मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।
हम तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।
हम साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें।
हम गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पाजलिं छिपेत्)

– ब्र. आस्था जैन, *देवरी*

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

रचयिता : क्षु. विनिर्भयसागर

विशद सागर की गुण आगर की, शुभ मंगल दीप जलाय हो
मैं आज उतारूँ आरतियाँ।
नाथूराम श्री इंदर जी के, गर्भ विषें गुरुँ आए।
घर घर खुशी के दीप जले हैं, सब जन मंगल गाए।।
गुरुजी सब जन मंगल गाए।
गृह त्यागी की वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल हो...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ ।
गुरुवर शील व्रतों के धारी, आतम ब्रह्म बिहारी,
खड्ग धार शिव पथ पर चलते, शिथिलाचार निवारी
गुरुजी शिथिला चार निवारी
ना रागी की ना द्वेषी की, शुभ मंगल दीप जलाय...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ ।
गुरु विराग सिंधु से आकर, तुमने दीक्षा धारी
तुमने अपने घर को छोड़ा, दुनियाँ छोड़ी सारी
गुरुजी दुनियाँ छोड़ी सारी
शुभ योगी की ना भोगी की, ले दीप रतन मय आज हो।
मैं आज उतारूँ आरतियाँ ।
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया।
भक्ति भाव से आरती करके, फूला नहीं समाया।।
गुरु जी फूला नहीं समाया
ऐसे गुरुवर को ऐसे मुनिवर को, कर वंदन बारंबार हो...
मैं आज उतारूँ आरतियाँ ।
विशद सागर की....

इत्याशीर्वाद

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अंहिसा महाव्रती की..2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।
जग की माया को लखकर के..2 मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।
गुरु की भक्ति करने वाला..2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन.....4 मुनिवर के ......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे
आशीर्वाद हमें दो स्वामी...2 अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन...4 मुनिवर के ...जय .. जय...

इत्याशीर्वाद